ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

नदियों के जलसंरक्षण एवं पुनर्जीवन के कुछ सफल प्रयास

ललित यादव
पीएच.डी. शोधार्थी
लोक प्रशासन विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
lalit.lalitkumar.kumar15@gmail.com

करीब पांच हजार साल पहले तक सरस्वती सबसे बड़ी नदी हुआ करती थी। सतलुज और यमुना इसकी सहायक नदियां थीं। यमुना पहले सरस्वती के सहारे ही अपनी यात्रा पूरी करती थी। सरस्वती का प्रवाह पूरब से पश्चिम की तरफ था, लेकिन हजारों साल पहले आए भीषण भूकंप के चलते यमुना और सतलुज नदियां सरस्वती से अलग हो गई। दोनों नदियों ने अपने मार्ग बदल लिए और सरस्वती धीरे–धीरे भूगर्भ में चली गई। ऋग्वेद में वर्णित सरस्वती मिथकीय नदी नहीं है, इस बात का वैज्ञानिक प्रमाण हरियाणा में खुदाई के दौरान इसका पानी मिलने से स्पष्ट हो गया है। यद्यपि अतीत में इस मसले पर अभी तक विभिन्न विद्वानों ने अपने मत प्रकट किए हैं। हरियाणा के यमुनानगर के जिस मुगलावाली गांव में 10 फीट की खुदाई में मिले पानी को हजारों साल पहले लुप्त सरस्वती नदी का पानी बता उसके पुनर्जन्म के रूप में माना जा रहा है, उस अवधारणा को तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम (ओएनजीसी) के अध्ययन 'सरस्वती ओएनजीसी प्रोजेक्ट' में पहले ही मजबूत आधार दिया जा चुका है। वर्ष 2005 में रिमोट सेंसिंग और धरातलीय अध्ययन के माध्यम से ओएनजीसी के भूगर्भीय विशेषज्ञ यह बता चुके थे कि सरस्वती नदी आज भी सैकड़ों किलोमीटर नीचे जिंदा है। संस्थान ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के भारत–पाक विभाजन के कुछ समय बाद के सर्वे का अध्ययन भी किया। पता चला कि हरियाणा व राजस्थान में करीब 200 स्थलों पर सरस्वती के पानी के निशान मौजूद हैं।

ऐसा नहीं है कि सभी स्तरों पर नदियों को लेकर उदासीनता छाई हुई है, समाज के कुछ ऐसे भी लोग हैं जो नदी संस्कृति को पुनर्जीवित करने के प्रयास में अनथक लगे हैं। देश की कई नदियों को पुनर्जीवित किया गया है। राजस्थान की कई सूखी नदियों में जलधारा बहाकर वहां की धरती को फिर से हरी–भरी करने का करिश्मा सबके सामने है। तरुण भारत संघ जैसी कुछ सामाजिक संस्थाएं दिन–रात नदियों को सदानीरा बनाने जुटी हैं। राजस्थान में अरावली की पर्वतमाला में स्थित सरिस्का की खूबसूरत और हरी–भरी ऊँची पहाड़ियों के बीच पत्थरों पर धारा प्रवाह करती हुई एक नदी है भगाणी। जब तरुण भारत संघ मांडलवास में आया तो यहाँ गाँव में केवल एक पुराना जोहड़ व एक छोटी सी पक्की मेड़बंदी थी। रख–रखाव की कमी के कारण ये इस्तेमाल करने लायक नहीं रह गये थे। वर्षा का अधिकतर पानी बहकर नालों में चला जाता था। साल दर साल आए सूखे ने स्थिति को और भी भयावह कर दिया। 1975 में सरकार द्वारा बनाए गए चेकडैम के सिवाय कोई दूसरी शुरुआत भी नहीं हुई थी। 1985 में तरुण भारत संघ ने नदी में जोहड़ से काम शुरू किया। लोग जोहड़ बनाओ–पानी बचाओ गीत गाते, पदयात्रा करते, गांव–गांव जाकर जल संरक्षण के प्रभाव की कहानी सुनाते। इससे गांव में जल संरक्षण का कार्य तेजी से शुरू होने लगा। लोगों की कड़ी मेहनत के लिए उन्हें सम्मानित भी किया जाता, इस तरह गांव वालों का आत्मविश्वास बढ़ा और संयुक्त प्रयास से भगाणी नदी बेसिन में एक के बाद एक सैकड़ों जोहड़–बांध बनते चले गए। वर्तमान में भी यह नदी सतत बह रही है।

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

अरवरी नदी की कहानी यहां के इलाके में कम पढ़े–लिखे लोगों द्वारा अपने प्रयासों और संकल्पों की ताकत द्वारा लिखी गई। 1985 के दौरान यहां अकाल का दौर शुरू हो चुका था। कुओं का जल स्तर निम्न से निम्नतर होता जा रहा था। यहां की ज्यादातर नदियों का यही हाल था लेकिन अरवरी नदी का सूख जाना एक गंभीर विषय था। इस नदी को जीवित करने के लिए तरुण भारत संघ ने ग्राम स्वराज्य पदयात्रा शुरू की। गांव के लोगों ने भी अपनी परंपरागत सूझ–बूझ से सूख चुके कुओं में उतर–उतर कर धरती के अंदर की परतों को देखा–परखा। इसके बाद जल संरक्षण का काम ताल–पाल और झाल के सिद्धांत पर शुरू किया गया। पानी के इन कामों के प्रभाव से ही 1990 में इस क्षेत्र में पानी दिखाई देने लगा। वर्ष 1996 में चौमासे के बाद अरवरी नदी पूरे साल बहने लगी थी। नदी पुनजीर्वित हो गई थी।

आजादी के बाद जब जमींदारी के जंगल सरकारी होने लगे, तो बड़ी तादाद में जंगलों का कटना शुरू हो गया। सारा जंगल वन विभाग के कब्जे में चले जाने के कारण लोग भी जंगलों के प्रति उदासीन हो गए। इस तरह जंगल के खत्म होने के साथ–साथ पानी का खत्म होना भी स्वाभाविक हो गया। इस प्रकार सूखे ने पूरी सरसा नदी के जलग्रहण क्षेत्र को अपनी चपेट में ले लिया। सरकार द्वारा भी पुनर्भरण से ज्यादा जलशोषण के कारण इस इलाके को डार्क जोन घोषित कर दिया व हालत यह हो गई कि पूरा इलाका बेपानी हो गया। 1986 में जोहड़ बनाकर सरसा को पुनर्जीवित किया गया। जोहड़ बनाने में माहिर मीणाओं की बस्ती गोपालपुरा में सबसे पहले मेवालों का बांध एक चौंतरे वाला जोहड़ 1986 में बना। बरसात के पहले मानसून में ही जोहड़ भरने से सूखे कुओं में पानी आना शुरू हो गया।

जहाज वाली नदी राजस्थान में अलवर जिले की तहसील राजगढ़ में है। पूर्व से पश्चिम गुवाड़ा और देवरी गांवों को पार कर यह नदी जहाज नामक तीर्थ स्थान के ऊपर तक आती है। इसलिए इसे जहाज वाली नदी कहते हैं। 1985 के दौरान धीरे–धीरे वजह–बेवजह जंगल कटने लगे। मिट्टी का कटाव भी बढ़ गया। नतीजतन झरने सूखे और फिर धरती सूख गई। नदी नाला बन गई और एक दिन वह नाला भी सूख गया। किसी नदी के जलागम में जंगल संरक्षण का काम बिना पानी नहीं हो सकता। जिसके लिए यहां छोटे–छोटे बंधे, जोहड़, एनीकेट, मेड़बंदिया बनाने के साथ पौधा रोपण का काम शुरु किया गया। धीरे–धीरे बंधों के बनने से न केवल पानी ही नहीं रुका बल्कि लोग भी पानीदार हो गए।

मालवा पठार के उत्तर से निकलने वाली शिप्रा नदी बारिश के मौसम को छोड़ साल के अधिकतर महीने सूखी ही रहती थी। शिप्रा को नया जीवन देने के लिए वर्ष 2012 में राज्य सरकार द्वारा नर्मदा–शिप्रा सिंहस्थ लिंक परियोजना की शुरूआत की गई। परियोजना के तहत बिजली के पंप का इस्तेमाल करते हुए नर्मदा की ऊंचाई को 350 मीटर बढाया गया। इसके लिए चार स्थानों पर पंपिंग स्टेशन भी बनाए गए। नर्मदा के जल को शिप्रा के उद्गम की ओर मोड़ा गया। नर्मदा और शिप्रा का मेल इंदौर के नजदीक स्थित उज्जैनी गांव में हुआ है। अब पानी देवास होते हुए उज्जैन तक पहुंचता है जिससे मालवा के तकरीबन 3,000 गांव और 70 कस्बों में पेयजल की किल्लत दूर हुई है। यही नहीं, नर्मदा के पानी की मदद से लगभग 17 लाख एकड़ जमीन में सिंचाई की सुविधा भी उपलब्ध कराई जा सकी है।

रूपारेल नदी के जलागम क्षेत्र में नवें दशक में पानी का अभाव हो गया। नदी के जलागम क्षेत्र में तरुण भारत संघ और गांवों के लोगों के संयुक्त प्रयास से पानी का सबसे पहला काम 1990 के दौरान इंदोक

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

गांव के चिड़ावतों के गुवाड़ा में हुआ था। सबसे प्रेरणादायक बात यह है कि इस गांव में पानी के काम में पुरुषों से ज्यादा महिलाओं ने भागीदारी की। संस्था ने सर्वप्रथम स्वावलंबन की दिशा में काम करते हुए ग्राम संगठन, स्वास्थ्य और शिक्षा का काम किया। फिर काम शुरू हुआ जलसंरक्षण कार्यक्रमों का, जिन्होंने लोगों में जल को संरक्षित करने के प्रति जागरुकता बढाई। पूरी मेहनत के साथ साझा श्रम करते हुए जोहड़ बनाने का कार्य शुरू किया गया। फलस्वरूप मेहनत रंग लाई और वन्य जीवों को पीने का पानी उपलब्ध हुआ तथा जंगल में हरियाली बढ़ी। यहां के क्षेत्र में अकाल होना कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन आज यहां बरसात के पानी को सहेज के रखने की अनूठी परंपरा से दुनिया सीख रही है।

नदियों के समाप्त होने की वजह अब बदल चुकी है। कुदरत की जगह अब इंसान ने ले ली है। इंसानी सभ्यता को पुष्पित–पल्लवित करने में जिन नदियों का बखान नहीं किया जा सकता है, उनके संरक्षण–संवर्द्धन के प्रति हमारी अन्यमनस्कता तो जगजाहिर है। उनको बचाने की जगह हम खत्म करने पर आमादा हैं। उनका अतिक्रमण करके, उन्हें विषैला बनाकर उनकी पवित्रता नष्ट करके, उनका घरौंदा तोड़कर हम प्रत्यक्ष और सिर्फ प्रत्यक्ष रूप से इंसानियत का नुकसान कर रहे हैं। इसका दुष्परिणाम उनके उफान के रूप में यदा–कदा दिखता भी है। नदियां वर्षा के मौसम में हमें निश्चित बताकर जाती हैं कि वे कौन हैं। तब शासन, सेना और समाज उनकी फैलाई बाढ से निपट नहीं पाता और अपने पाप छिपाते हुए इनको वह प्राकृतिक आपदा कह देता है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक हजारों नदियां बहती रही हैं। पश्चिम घाट की नदियों, हिमालय की नदियां, सतपुड़ा और विंध्याचल की नदियां–कोई भी नदी कुछ करोड़ साल से कम आयु की नहीं है लेकिन हमने देखते देखते पिछले साठ–सत्तर सालों में छोटी नदियों को या तो प्रदूषित कर दिया या उन पर तरह तरह के बांध और नहरें निकालकर उन्हें लगभग सुखा दिया। लिहाजा देश की सभी नदियां प्रदूषण के मानकों का रिकार्ड बना रही हैं। 'आधी छोड़ पूरी को धावै, पूरी मिलै ना आधी पावै' कहावत नदियों के संदर्भ में हम भारतीयों पर बिल्कुल सही बैठती है। बहुत अधिक लाभ कमाने के चक्कर में हम अपनी नदियों को प्रदूषित कर चुके हैं जिनमें से बहुत सी नदियाँ तो विलुप्ति की कगार पर हैं। कभी नदी संस्कृति के मामले में हम दुनिया के सिरमौर हुआ करते थे। दुनिया के किसी भी क्षेत्र की तुलना में सर्वाधिक नदियां हिमालय के हिमशिखरों से निकलकर भारत के मैदानों को शस्य श्यामला बनाती रही हैं। ये सदानीरा यहाँ के करोड़ों लोगों के आजीविका के स्त्रोत के साथ जैव विविधता और पर्यावरण संतुलन की एक बड़ी माध्यम रही हैं। भारतीय मन, समाज हर नदी को गंगा जैसा पवित्र मानता था, उसके एक–एक बूंद को अमृत मानता था और अमृत की तरह बचाकर रखता था, उसमें विष या प्रदूषण नहीं मिलने देता था, लेकिन बाद के आधुनिक दौर में हर छोटे बड़े शहर का कचरा, पूरी गंदगी, मलमूत्र उद्योगों का जहर और उसी के साथ विकसित होने के नाम पर जहरीली होती खेती का जहर सब कुछ बहकर हमारी नदियों में मिलने लगा है। नदी का मंत्रालय है व नदी को प्रदूषित होने से रोकने के लगभग चालीस साल पुराने नियम हैं, लेकिन कोई नदी साफ नहीं हो पाई है। न जाने कितने इनको साफ करने की सौगंध खा चुके हैं और सौ–सौ करोड़ रुपये इनमें बहा भी चुके हैं लेकिन इन तमाम योजनाओं का परिणाम एकदम शून्य रहा है। ऐसे में हजारों साल पहले लुप्त हुई सरस्वती के मिल जाने का सुख और पिछले सौ साल में लुप्त और प्रदूषित हो रही हजारों नदियों का दुख किसका उत्सव मनाएं किसका रोना रोएं।

असल में हमने अपने तथाकथित विकासी ढांचे में नदियों का मान सिर्फ शोषण भर तक रखा है। इनमें बांध बना लो तो बिजली देगी या फिर सैरगाह के रूप में रॉफ्टिंग और अगर कुछ नहीं तो कचरा तो ढोती ही

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

है। हमारे इसी व्यवहार से नदियों ने हमारा साथ छोड़ना शुरू कर दिया। एक–एक करके यह हमारी सारी नदियों का भविष्य होने वाला है क्योंकि हमारे पास नदियों के उपयोग की तो योजनायें हैं पर इन्हें जिन्दा रखने की एक भी नहीं। गंगा भी अब साथ छोड़ने लगी। अगर इसी तरह नदियां साथ छोड़ती चली जाएंगी तो एक दिन हम जीने के एक ऐसे संकट में पड़ जाएंगे, जहाँ जान के लाले पड़ जायेंगे। हमारे पूर्वजों को नदियों के उपकार की गहरी समझ थी इसलिए उन्होंने आने वाली पीढ़ी को विरासत में नदियों को देवी के रूप में समझाने की कोशिश की। पर विकासी नशे में मदमस्त हमने नदियों को अपनी सोच से बाहर निकाल दिया। जिस तरह से स्वस्थ शरीर में रक्त प्रवाह अविरल होना चाहिए। उसी तरह देश की जीवंतता व टिकाऊ विकास के लिए नदियां भी अवरुद्ध नहीं होनी चाहिए। नदियों के साथ हमारा व्यवहार कतई ठीक नहीं। अपनी परंपराओं में जाकर ही नदी के प्रति हमारी समझ बन पाएगी। अजीब बात है जहाँ नदी करोड़ों लोगों को पालती है वहीं दूसरी तरफ वे ही करोड़ों लोग नदी को मारने पर उतारू हैं। आज नदियां अपने अस्तित्व के लिए जूझ रही हैं कल हमारी बारी होगी। भले ही डायनासोरों के खात्मे का आदमियत पर कोई असर न पड़ा हो, लेकिन नदियों की विलुप्तता प्राणीजगत को ही नेस्ताबूद कर देगी। फिर इतिहास लिखने वाले भी नहीं होंगे।

सरस्वती नदी कहीं गायब नहीं हुई थी, वह लक्ष्मी के प्रभाव में लोगों द्वारा कुछ काल के लिए भुला दी गई थी, लेकिन कालांतर में उनकी जरूरत लक्ष्मी की तुलना में अधिक महसूस की जाने लगी। जैसे–जैसे लक्ष्मी की पूजा और सम्मान बढ़ता गया, वैसे वैसे सरस्वती लुप्त होती चली गई। उसी प्रकार भौगोलिक उतार–चढावों ने हमारी सरस्वती नदियों को लुप्त कर दिया। भारत के मैदानी क्षेत्रों में बहने वाली सरस्वती नदी धीरे–धीरे सभी स्थानों पर सूख गई, निर्जन हो गई। ये जल धरती के ऊपर दिखना बंद हो गया लेकिन धरती के नीचे सरस्वती प्रवाहित रही। भारतीय शिक्षा में जल के शोषण की तकनीक, इंजीनियरिंग, प्राकृतिक संसाधनों के अति उपयोग के लिए बहुत जोरों से पढाई जाने लगी। परिणामस्वरूप बादलों से मिली बारिश की बूंदों को सहेजना, सहेजकर धरती माता के पेट में रखना, यह ज्ञान हम सब भूलने लगे। उसके स्थान पर भूजल शोषण करने वाली तकनीक और इंजीनियरिंग प्रभावी रूप से बढ़ गई। अब तो धरती के अंदर प्रवाहित होने वाली सरस्वती भी शोषित होने लगी। फिर एक दौर आया, जब लोगों को लगने लगा कि अब धरती के अंदर भूजल नहीं है तो वर्षा की बूंदों को पकड़कर धरती का पेट भरने का काम शुरू हुआ। जहाँ–जहाँ ऐसा हुआ, वहां वहां सरस्वती नदी पुनजाग्रत हो उठी और सरस्वती के जागरण का दौर शुरू होने जैसा लगने लगा। अभी ऐसा लगने लगा कि भारत में प्रकृति को प्रेम करने वाली और प्रकृति के लेन देन के संतुलन को बनाने वाली चर्चाएं चालू हुई हैं। भारत में जगह–जगह पर नदियों को पुनर्जीवित करने के प्रयास हो रहे हैं। सिर्फ इतना ही नहीं हाल के वर्षों में आमतौर पर लोगों में इसके प्रति चेतना पहले की तुलना में बढी है। कुछ जगहों पर इसके बेहद उत्साहजनक नतीजे निकले हैं। उनकी सफलता गाथा अन्य लोगों के लिए प्रेरणास्त्रोत बन सकती हैं। फतेहपुर में विद्यानंद जी ने ससुर खदेरी नामक नदी को शुद्ध सदानीरा बनाने के लिए प्रयास शुरू किया। परिणामस्वरूप नदी में जल का प्रवाह बढ़ गया। महाराष्ट्र में माण नदी पर काम शुरू हुआ है व ऐसे प्रयासों की संख्या में दिन–प्रतिदिन इजाफा हो रहा है। लेकिन भारत में सरसने वाली नदियों की संख्या हजारों में है। ये लक्षण बताते हैं कि भारत में सरस्वती का पुनर्जागण हो रहा है। इसलिए सब नदियों पर भारत के राज, समाज और संतों को मिलकर सरस्वती पुनर्जागण का अभियान भारत भर में शुरू करना चाहिए। सरस्वती का यह पुनर्जागरण अतिक्रमण के हमलों से बचा रहा तो जल्दी ही हमें फिर एक बार शिखर पर पहुंचा सकता है। अगर अपनी नदी सभ्यता को पुनर्जीवित करना है तो हम सभी को खुद के अन्दर नदियों के प्रति सम्मान भाव को जागृत करना होगा और भगीरथ बनकर उनका अस्तित्व बचाने का हर संभव प्रयास करना होगा।

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)